%%A. D. 1190 ― 1435

%%or Śaka 1112 – 1357

%% p. 593

NO. 300

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Siṃhāchalaṃ<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 890; A. R. No. 289-E of 1899 )

Ś. 1281

(१।) स्वस्ति श्री शकवत्सरे शशि-वसु-प्रद्यो{द्यो}तनांके रवेर्व्वारे

भाद्र[पदा] सित प्रतिपदि श्रीसिंहशैले

(२।) [सि]तुः । दत्वा वृत्तिमयू युजव्दशजनान् धूपद्वये सन्निधौ

स्यातुं श्रीनरसिंहभारतिमुनि[ः] स्वाभीष्ट सि-

(३।) द्ध्यै स(स्स)दा । [१] द्धौ वेणुवादकावष्ट सीमंतिन्यश्च ते दश ।

एकैक धूपवेलायां पंच पंचान्यकल्पयत् । [२] शकवर्ष[वु]-

(४।) [लु] १२८१ गुनेंटि भाद्रपद वहल प्रतिपदियु रविवारमुनांडु<2>

श्रीनरसिंहभारति श्रीपादालुं श्रीनर-

(५।) सिहनाथुनि सन्निधि[नि] नित्यमुन्नु उभयधूपालयंदुन्नु

नामसंकीर्त्तनमु शेयनु पेटिन

(६।) कोलुवुलु सानुलवल्ल मुखरिखामु नट्टु व कतासानि कूंतुरु

सवरसानि नट्टव एक्कासानि पोतासा-

(७।) नि श्रीत कूंतुरु नच्चासानि म्रुग्गुटिन अक्कासानि ई वास्य(द्य)कारु

तम संप्रदायमु वल्लनु मु-

(८।) खरि अज्जपरेड्डि तेवासानि कुंतुरु कोड्यासानि ई सच्चासानि

कूतुरु पिनकोड्यासानि समु-

<1. In the twenty-first niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 8th September, 1359 A. D. Sunday, according to the Amānia system.>

(९।) द्रपिराटि कूतुऋ चिगासानि वरदनभोडिग चिंगासानि कुतुऋ

चिट्टासानि ई वाद्यकार चिं[कु]नु ब्र-

(१०।) ह्मनु गापोलु १० लकिन्निं पंचादुलचेत ५ कुंचलु प्रसादलु

ठावुपट्टि इचिरि ई प्रसादमु भु-

(११।) जिचि उभय धूपालानु वरुसवारु स कीर्त्तनमु चेयंगलारु ।

श्रीपादालु भड(डा)[र]म दु ग डम(मा)डालु

(१२।) पदि १० तेलिकट्ट पेट्टि नित्यमुन्नु कुडुमुलु एनिमिदि ८

वृत्तिगां वडसिरि ई कुडुमुलु कोनंगलवारु नरसिहभारतिश्रीपाद्दा-

(१३।) [लु] ... ... ... नरसिह ... ... ... ...

(१४।) ... ... ... ... ... ... ...

(१५।) भूमिपिराटिकिन्नि मु ... ... ... ...

(१६।) वडिवा , अट्टि प्रसादमुनु

(१७।) कुडुमु १ इच्चि अना

(१८।) ... ... ... ...

(१९।) ... ... । चाकिलि नरसिहु कू[तुऋ] नाच्चिसानि

[म]खरिमायासानि नरसिहुकूंतु-

(२०।) ऋ ... ... ... ... मूंडु तलिह .... .... र गसानि अख

कूंतुऋ . डु मुखरि गुडमारे तम्म नट्टुवु कूंतुऋ

(२१।) .. पोन्नांवरं । .... .... इंतवट्टु वा[रु]नु ... ... लाडपोलान

वेलुपलि दक्षिण दिककुनं दरुमु

(२२।) न स्यालुन्नु स्वरूप ग १ नेलपडि ... वरदयंगारु परिचार वुलुकु

समप्पिचेनु ... मु[न्नू]टपदुंद्रतोटि प्र ..

(२३।) ... कोलि १० एकाकि श्रीवैष्णवुलु १० ... ... जीयन १० ... ...

कुडुमुलु[मृ]ंडु ३ पेटिन ...... धमु कुडुमुलु अनुभविचि उभय-

(२४।) धु(धू)पाल[न्न]व सरन वीरु वरुसनुंडु एवुरुन्नु कोनंगालारु

ई धर्म्म श्रीवैष्णव रक्ष श्री श्री श्री [।।]